केरल-प्रश्न-संग्रह

● भाषाटीकासहितः ●

संशोधक तथा टीकाकार :-

ज्यो० आ० पं० श्रीसीताराम झा

प्रकाशकः

मास्टर खेलाड़ीलाल संकटाप्रसाद

संस्कृत पुस्तकालय

कचौड़ीगली :: वाराणसी-१

मूल्य २-००

* श्रीः *

केरल-प्रश्न-संग्रह

•

मिथिलादेशान्तर्गत-चौगमा-निवासि-वाराणसेय-संस्कृत-
विश्वविद्यालयीय-प्राध्यापक-ज्यौ० आ०-
स्व० पं० श्रीसीताराम झा कृत-

भाषार्थसहितः ।

*

तेनेव संशोधितः ।

❀

स च
वाराणसीस्थ-
मास्टर खेलाड़ीलाल संकटाप्रसाद
संस्कृत-पुस्तकालयाऽध्यक्षैः स्वकीये
'मास्टर प्रिंटिंग प्रेस' यन्त्रालये
मुद्रयित्वा प्रकाशितः ।

❀

❀

[अष्टम् संस्करणम्] सन् १९८१ ई० [मूल्यम् ३-००

भूमिका

"यथा शिखा मयूराणां नागनां मणयो यथा।
तथा वेदाङ्गशास्त्राणां ज्योतिषं मूर्धिन तिष्ठति ॥"

समस्त वेदांगों में ज्योतिषशास्त्र श्रेष्ठ माना जाता है। ज्योतिषशास्त्र के भी गणित, जातक और संहिता ३ स्कन्ध हैं। इन तीनों में भी सहिता सर्वोप-युक्त है। क्योंकि इसमें ग्रहनक्षत्रों की स्थितिवश समय के शुभाशुभ फल बतलाये गये हैं। उसी सहिता का एक अंग प्रश्नशास्त्र है, जिसमें समय और स्वर के द्वारा शुभाशुभ फलों का निरूपण है। जिसके शङ्करादि देवों तथा वशिष्ठादि महर्षियों और आचार्यों द्वारा प्रणीत ग्रन्थ हैं। जिसमें बहुत अनुपलब्ध और बहुत गूढ़ाशय के ही हैं। तथा जो टीकादि द्वारा स्पष्टाशय के भी हैं, तो बहुत ग्रन्थों में ग्रन्थों में लग्न और ग्रहों की स्पष्टता करके फलों क्रिया गया है, जिससे शीघ्र प्रश्नों का उत्तर कहना कठिन हो जाता है। इस लिये केरलीय प्रश्न ग्रन्थों का ही लोग आदर करते हैं, क्योंकि इसमें केरल स्वर और वर्ण पर से ही प्रश्नों का स्पष्ट उत्तर तत्काल ही बतलाने की क्रिया दिखाई गई है। केरलीय ग्रन्थों मे भी केवल प्रश्न संग्रह सर्वोत्तम है। परश्च उपलब्ध पुस्तको में लेखक आदि के दोषवश बहुत अशुद्धियाँ हो गई थी। इसलिये मैंने इसका सशोधन करके अल्प-संस्कृतज्ञों के उपकारार्थं सोदाहरण भाषार्थ लिखकर काशी के बबू श्री जगन्नाथ प्रसादजी को सादर समर्पण कर दिया है, जिन्होंने अपने द्रव्य व्यय से इसे प्रकाशित किया है। इससे जनता का कुछ भी उपकार होती मैं अपना परिश्रम सफल समझूँगा। इसमें मुद्रणयन्त्र तथा दृष्टिदोषवश जो कुछ त्रुटि हुई हो तदर्थं क्षमा प्रार्थी हूँ। यतः—

"स्खलनं गच्छतः क्कापि भवत्येव प्रमादतः।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनाः ॥" इति—

विनीत—

—श्रीसीताराम झा

❀ केरल प्रश्नसंग्रहस्थ-विषयानुक्रमणिका ❀

वर्षेऽङ्काङ्कामृतुल्ये श्रीसीतारामशर्मणा ।
संशोध्य केरलग्रन्थो भाषया समलङ्कृतः ॥

केरल-प्रश्न-संग्रह

भाषाटीकासहितः

टीकाकारकृत-मङ्गलम्—

नत्वाऽर्कं जगदाधारं केरलप्रश्नसंग्रहे ।
वच्मि सोदाहृतिं भाषाटीकां बालमनोमुदे ॥

ग्रन्थकार-कृत-मङ्गलम्—

त्रैलोक्यफलबोधाय येन दिव्येन चक्षुषा ।
त्रिकालविषयाः प्रोक्तास्तस्मै केरलये नमः ॥ १ ॥

तीनों लोक के शुभाशुभ फल जानने के लिए जिसने अपने दिव्यनेत्र से भूत, भविष्य, वर्तमान विषय को कहा है, उस केरल महानुभाव को नमस्कार करता हूँ ॥ १॥

ज्ञानदीपकमासाद्य वर्त्तिं कृत्वा सदक्षरैः ।
स्वरस्नेहेन संयोज्य ज्वालयेदुत्तरेन्धनैः ॥ २ ॥

ज्ञानरूपी दीपक को अक्षररूप बत्ती, स्वर रूप तेल और उत्तररूप लकड़ी से प्रज्वलित करना चाहिये ॥ २ ॥

प्रश्नोत्तर कहने में योग्य व्यक्ति और समय—

क्षुद्र-पाखण्ड-धूर्तेषु श्रद्धाहीनोपहासके ।
नोत्तरं तथ्यतामेति यदि शम्भुः स्वयं वदेत् ॥ ३ ॥
सभायां नैव वक्तव्यं नैव प्रश्नोत्तरं निशि ।
नाऽपराह्णे त्वविश्वस्ते त्वरितं न कदाचन ॥ ४ ॥

क्षुद्र, पाखण्डी, धूर्त, श्रद्धाहीन और उपहास करने वाले को यदि स्वयं महादेव भी प्रश्नोत्तर कहें तो भी सत्य नहीं हो सकता है। सभा में, रात्रि में, अपराह्न में तथा अविश्वस्तों को और बिना विचारे हुए जल्दी में प्रश्नोत्तर नहीं कहना चाहिए ॥ ३-४ ॥

भक्तायार्ताय दीनाय दैवज्ञो न दिशेद्यदि ।
विफलं भवति ज्ञानं तस्मात्तेभ्यः सदा वदेत् ॥ ५ ॥

भक्तिमान्, दुःखी और धनहीन जनों को जो प्रश्नोत्तर नहीं कहता है उसका ज्ञान व्यर्थ हो जाता है, इस लिये इन लोगों को अवश्य उत्तर कहना चाहिये ॥ ५ ॥

प्रश्न करने की विधि—

सम्पूज्य खचरान् साङ्गान् दैवज्ञं स्वक्रियापरम् ।
श्रद्धायुक्तः पूर्णपाणिः पृच्छेदव्याकुलः पुमान् ॥ ६ ॥
फलपुष्पयुतो यो हि दैवज्ञं परिपृच्छति ।
तस्यैव कथयेत् प्रश्नं सत्यं भवति नान्यथा ॥ ७ ॥

साङ्ग नवग्रहों की (पञ्चोपचार से, अथवा मानसिक) पूजा करके जो ज्योतिषी अपने कर्म में दक्ष हो उसके पास यथा-शक्ति फल, द्रव्यादि युक्त जाकर सावधान चित्त से प्रश्न करे। ज्योतिषियों को चाहिए कि—जो फलादियुक्त आकर प्रश्न करे उसी को प्रश्न कहे, अन्यथा उत्तर सत्य नहीं होता है ॥ ६-७ ॥

दिशा से प्रश्न का शुभाशुभ फल—

प्राची प्रतीची माहेशी कौबेरी दिक् शुभावहा ।
अवाची राक्षसी दुष्टा शून्याग्नेयी च मारुति ॥ ८ ॥

यदि पूर्व, पश्चिम, ईशान और उत्तर में बैठकर प्रश्न करे तो शुभ तथा दक्षिण और नैर्ऋत्यकोण में अशुभ और अग्नि, वायुकोण से शून्य फल समझना चाहिये ॥ ८ ॥

प्रश्न समय में शुभ शकुन—

दृङ्मनसो प्रीतिकरं प्रश्नेषु दर्शनं यदि श्रवणम् ।
माङ्गल्यद्रव्याणां भवति शुभं विनिर्दिशेत्तत्र ॥ ९ ॥
हय-गज-वृष-हंसादेः पृच्छाकाले यदा रुतं भवति ।
दर्शनमथवा तेषां शुभदं प्रश्नं विनिर्दिशेत्तत्र ॥ १० ॥

प्रश्न समय में दृष्टि और मन के प्रसन्नकारक तथा मङ्गलमय वस्तुओं का दर्शन या श्रवण हो तथा हाथी, घोड़ा, हंस आदि पक्षियों के शब्द श्रवण या दर्शन हो तो प्रश्न का फल शुभ समझना ॥ ९–१० ॥

विशेष—इससे सिद्ध होता है कि अशुभ वस्तु के दर्शन और श्रवण से अशुभ फल होता है ॥ ९–१० ॥

प्रश्नों के संयुक्त आदि आठ भेद—

संयुक्तः, असंयुक्तः, अभिहतः, अनभिहतः, अभि- ।
घातिकः, आलिङ्गितः, अभिधूमितः, दग्ध इति ॥ ११ ॥

इस प्रकार प्रश्नों के आठ भेद हैं ॥ ११ ॥

उनके लक्षण—

यदि प्रष्टा प्रश्नसमये स्वकायं स्पृष्ट्वा पृच्छति ।
तदा संयुक्तप्रश्नः स च लाभकरो भवति ॥ १२ ॥

यदि प्रश्नकर्त्ता अपने शरीर को स्पर्श करता हुआ प्रश्न करे तो 'संयुक्त' प्रश्न समझना, वह लाभकारक होता है ॥ १२ ॥

यदि पथि शयानो दोला-गज-तुरङ्गारूढो वा भवति ।
भावरहितः फलद्रव्यविवर्जितः पृच्छति तदाऽसंयुक्तप्रश्न ।
अस्मिन् बहुदिनानन्तरं लाभादिसुखं भवति ॥ १३ ॥

यदि मार्ग में चलता हुआ, वा सोया हुआ, पालकी, हाथी, घोड़ा आदि सवारी पर चढ़ा हुआ भावहीन, फल-द्रव्यरहित होकर पूछे तो असंयुक्त प्रश्न समझना, वह बहुत दिनों में सुख लाभकारक होता है ॥ १३ ॥

यदि प्रष्टा वामहस्तेन वामाङ्गं स्पृशति ।
तदाऽभिहतः प्रश्नः, अलाभकरो भवति ॥ १४ ॥

यदि वाम हाथ से अपने वाम अङ्ग का स्पर्श करता हुआ पूछे तो अभिहत प्रश्न समझना, वह लाभकारक नहीं होता है ॥ १४ ॥

यदि प्रष्टा स्वहस्तेन परकायं स्पृशति ।
तदाऽनभिहतः प्रश्नः कार्यस्य लाभकरो भवति ॥ १५ ॥

यदि अपने हाथ से दूसरे का अंग स्पर्श करता हुआ पूछे तो अनभिहत प्रश्न कहाता है, वह कार्य सिद्धकारक होता है ॥ १५ ॥

यदि प्रष्टा मस्तकं कटिं हृदयं हस्तं पादं च मर्दयेत् ।
तदाऽभिघातिकः प्रश्नः शोकसन्तापकारको भवति ॥ १६ ॥

यदि मस्तक, कमर, हृदय, हाथ, पैर खुजलाता हुआ पूछे तो अभिघातिक प्रश्न समझना, वह शोक, सन्तापकारक होता है ॥ १६ ॥

यदि प्रष्टा दक्षिणकरेण निजं दक्षिणाङ्गं स्पृशति ।
तदाऽऽलिङ्गितः प्रश्नः लाभसुखादिकारको भवति ॥ १७ ॥

यदि अपने हाथ से अपने दाहिने अंग का स्पर्श करता हुआ पूछे तो आलिङ्गित प्रश्न होता है, वह सुख, लाभ आदिकारक होता है ॥ १७ ॥

यदि प्रष्टा दक्षिणकरेण वामकरेण वा सर्वाङ्गं स्पृशति तदाऽभिधूमितः प्रश्नः । अस्मिन् प्रश्ने किञ्चिल्लाभः मित्राद्यागमनं च ॥ १८ ॥

यदि अपने हाथ से सर्वाङ्ग (अनेक अङ्ग) का स्पर्श करता हुआ प्रश्न करे तो अभिधूमित प्रश्न होता है, उसमें थोड़ा लाभ और मित्रादि का आगमन होता है ॥ १८ ॥

यदि प्रष्टा रोदनदुःखभयार्तनीचस्थलसन्निधौ भक्तिभाव-रहितः पृच्छति तदा दग्धप्रश्न उदाहृतः। एष प्रश्नः शोक-सन्तापदुःखपीडाबहुलामकरो भवति। १९।

यदि रोते हुए, दुःखी, भय पीड़ित आदि तथा अधमजनों के समीप में प्रश्न करे तो दग्ध प्रश्न कहाता है, वह प्रश्न शोक, सन्ताप, दुःख और हानिकारक होता है ॥ १९ ॥

अथ जीवधातुमूलज्ञाननष्टद्रव्यस्थानबन्धमोक्षण-जीवितमरणजयपराजयलाभाऽलाभगमनाऽऽगमन-त्रिकालप्रश्नान् प्रकाशयतीद शास्त्रं नाऽन्यथा। १।

स्पष्टार्थ। भाव यह है कि यह (केरल) शास्त्र भूत, भविष्य, वर्तमान तीनों काल के फल बतलाने वाला है। इसमें अन्यथा नहीं होता है ॥ १ ॥

जीव, धातुऔर मूल का ज्ञान—

ऊर्द्ध्वदृष्टया भवेज्जीव अधोदृष्टया च मूलकम्।
समदृष्टया भवेद्धातुर्मूलदेवेन भाषितम्। २।

ऊपर दृष्टि करके पूछे तो जीव, नीचे दृष्टि करके पूछे यो मूल, और सामने दृष्टि करके प्रश्न करे तो धातु सम्बन्धी प्रश्न समझना। ऐसा मूलदेव याचार्य ने कहा ॥ २ ॥

यदा प्रष्टा प्रश्नं पृच्छति तदा दिनमानं त्रिभि-र्विभज्योदये आलिङ्गितप्रश्नः। ३। मध्यवेलायां अभिधूमितप्रश्नः। ४। अस्तङ्गतवेलायां दग्ध-प्रश्नः। ५। उदयवेलायां जीवधातुमूलम्। ६। मध्यवेलायां धातुमूलजीवं वदेत्। ७। अस्तङ्गतवेलायां मूलजीवधातुं वदेत्। ८।

जिस दिन प्रश्न करे, उस दिन दिनमान के ३ भाग करना, प्रथम भाग (उदय वेला) में प्रश्न हो तो आलिङ्गित, मध्य भाग में प्रश्न हो तो अभिधूमित, तृतीय भाग (अस्तवेला) में प्रश्न हो तो दग्ध प्रश्न समझना। उदय वेला के भा बराबर तीन भाग बनाकर क्रम से जीव, धातु और मूल। मध्य वेला के ३ भाग में क्रम से धातु, मूल जीव। अस्त वेला के ३ भाग में क्रम से मूल, जीव, धातु सम्बन्धी प्रश्न समझना चाहिये ॥ ३-८ ॥

उदाहरण—किसी ने सूर्योदय से ७ घड़ी पर प्रश्न किया, उस दिन दिन मान २७ है, तो ९, ९ घड़ी के तीन भाग हुए। अतः प्रथम (उदय) वेला में प्रश्न होने के कारण आलिंगित प्रश्न हुआ। अब प्रथम वेला के भी तीन भाग करने से ३-३ घड़ी हुई, इसलिये प्रश्न का समय तृतीय भाग में पड़ा, अतः मूल सम्बन्धी प्रश्न है, ऐसा उत्तर हुआ। इसी प्रकार सर्वत्र उक्त लक्षणों से समझना ॥ ३-८ ॥

आलिङ्गितवेलायामालिङ्गितप्रश्ने आलिङ्गित-फलम् ।९। आलिङ्गितवेलायामभि-धूमितप्रश्ने अभिधूमितफलम् ।१०। आलि-ङ्गितवेलायां दग्धप्रश्ने दग्धफलम् ॥११॥

इस प्रकार यदि आलिंगित वेला में ही आलिंगित (प्रथम भाग) में प्रश्न हो तो आलिंगित का फल, यदि आलिंगित वेला में अभिधूमित (द्वितीय भाग) में प्रश्न हो तो अभिधूमित का फल, यदि आलिंगित वेला के दग्ध (तृतीय भाग) में प्रश्न हो तो दग्ध फल समझना। जैसे—उपरोक्त प्रश्न में आलिंगित वेला के तृतीय भाग (दग्ध) प्रश्न समय है, इसलिये दग्ध प्रश्न हुआ ॥ ९-११ ॥

अथाभिधूमितवेलायामभिधूमितप्रश्ने आलिंगित-फलम् ।१२। अभिधूमितवेलायां दग्ध-

प्रश्ने अभिधूमितफलम् ॥ १३ ॥ अभिधूमित-
वेलायामालिंगतप्रश्ने दग्धफलम् ॥ १४ ॥

अभिधूमित वेला में भी यदि अभिधूमित (प्रथम भाग) में प्रश्न हो तो आलिंगित फल, अभिधमित वेला के दग्ध (द्वितीत भाग) में प्रश्न हो तो अभिधूमित, अभिधूमित वेला के अलिंगित (तृतीय भाग) में प्रश्न हो तो दग्ध ही फल समझना ॥ १२–१४ ॥

दग्धवेलायां दग्धप्रश्ने आलिगितफलम् ॥१५॥
दग्धवेलायामलिंगितप्रश्ने अभिधूमितफलम् ॥१६॥
दग्धवेलायामभिधूमितप्रश्ने दग्धफलम् ॥१७॥

• दग्ध वेला के दग्ध (प्रथम भाग) में प्रश्न हो तो आलिंगित, दग्धवेला के आलिंगित (द्वितीय भाग) में प्रश्न हो तो अभिधूमत, दग्धवेला के अभिधूमित (तृतीय भाग) में प्रश्न हो तो दग्ध फल समझना ॥ १५–१७ ॥

इति केरलमतेनाष्टविधप्रश्नविचारः ।

❀

पूर्वाह्णे बालक मुखात् पुष्पनाम् तु ग्राहयेत ।
मध्याह्ने युवतिमुखात् फलनाम च ग्राहयेत ॥ १ ॥
अपराह्णे वृद्धमुखात् वृक्षनाम च ग्राहयेत् ।
नद्या वा ग्राहयेन्न म रात्रौ सर्वमुखाद्‌ः बुद्धः ॥ २ ॥

पूर्वाह्ण (दिन के प्रथम भाग) में बालक के मुख से किसी पुष्प के नाम ग्रहण करावे। द्वितीय भाग में स्त्री के द्वारा किसी फल का नाम ग्रहण करावे। दिन के तृतीय भाग में वृद्ध पुरुष के द्वारा किसी वृक्ष (वट, पिप्पल आदि) और रात्रि में सब के मुख से नदी (गंगा आदि) का नाम ग्रहण करावे। और उन अक्षरों से आगे कहे विधि से पिण्ड बनाकर फल कहे ॥ १– ॥

अथवा-पृच्छकस्य वाक्याक्षराणि स्वरसंयुक्तानि ग्राह्याणि ।
यदि च प्रश्नाक्षराण्यधिकान्यस्पष्टानि भवेयुस्तदाऽयं विधिः ॥३॥
यदि प्रश्नकर्ता ब्राह्मणस्तदा तन्मुखात् पुष्पस्य नाम ग्राहयेत ॥४॥
यदि प्रश्नकर्ता क्षत्रियस्तदा कस्याश्चिन्नद्या नाम ग्राहयेत् ॥५॥
यदि प्रश्नकर्ता वैश्यस्तदादेवानांमध्येकस्यचिद् वस्यनाम ग्राहयेत्।
यदि प्रश्नकर्ता शूद्रस्तदा कस्यचित्फलस्य नाम ग्राहयेत् ॥७॥

अथवा प्रश्नकर्ता के मुख से जो अक्षर निकले—उसी से पिण्ड बनावे। यदि प्रश्न में बहुत अक्षर बोले—अथवा अस्पष्ट (साफ नहीं) हो तो फिर ऐसा करे कि—प्रश्नकर्ता ब्राह्मण हो तो उससे किसी फूल का नाम, क्षत्रिय हो तो नदी का नाम, वैश्य हो तो देवता के नाम, यदि शूद्र हो तो किसी फल का नाम ग्रहण करावे ॥ ६-७ ॥

इस प्रकार पिण्ड बनाने के लिये वर्ण और स्वरों के ध्रुवाङ्क—

12 21 11 18 15
अर्का प्रकृतिरीशानो धृतिः पञ्चदशैव हि ।
22 18 32 25 19
जातिरष्टादश रदास्तत्त्वान्येकोनविंशतिः ॥८॥
25 13 11 21 30 10 15
तत्त्वं विश्वे भवा एकविंशतिः खाऽग्निदिक्तिथिः ।
21 23 26
मूर्छना रामनेत्राणि ततः षड्विंशतिः स्मृतः ॥९॥
26 10 13 22 35
षड्विंशदश विश्वेऽक्षि-नेत्र-पञ्चगुणास्तथा ।
45 14 18 17 13 35
पञ्चाब्धिमनुधृत्यष्टि-रामेन्दुशरवह्नयः ॥१०॥
28 18 26 27 86
वस्वक्षिधृतिषड्विंशतारकाः षड्गजास्तथा ।
16 13 13 35
कला विश्वेत्रिचन्द्राश्च बाणरामास्तथा स्मृताः ॥११॥

26 35 35 12

ऋत्वक्षिशररामाश्च बाणरामास्तथा इनाः ।
अकारादिहकारान्तवर्णानां तु ध्रुवाः स्मृता ॥१२॥

ये अंक (१२) अकारादि हकारान्त सब अक्षरों के ध्रुव हैं।

अथ स्पष्टार्थं चक्र—स्वरध्रुवाङ्क चक्रम्

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ	अं
१२	२१	११	१८	१५	२२	१८	३२	२५	१६	२५

अथ व्यञ्जनध्रुवाङ्क चक्रम्

क्	ख्	ग्	घ्	ङ्	च्	छ्	ज्	झ्	ञ्	ट्
१३	११	२१	३०	१०	११	२१	२३	२६	२८	१०
ठ्	ड	ढ्	ण्	त्	थ्	द्	ध्	न्	प्	फ्
१३	२२	३५	४५	१४	१८	१७	१३	३५	१८	१८
ब्	भ्	म्	य्	र्	ल्	व्	श्	ष्	स्	ह्
२६	२७	८६	१६	१३	१३	३५	२६	४५	३५	१२

उदाहरण—जैसे किसी ब्राह्मण ने प्रश्न किया तो उससे पुष्प का नाम ग्रहण करवाने से 'गुलाब' का नाम लिया। अतः (ग = २१, उ = १५,- ल = १३, आ = २१, व = ३६, अ = १२) वर्ण और स्वर के सब ध्रुवों का योग १०८ यह पिण्ड हुआ।

लाभ प्रश्न विचार —

लाभाऽलाभे द्विचत्वारि ४२ क्षेपो भागास्त्रिभिः स्मृतः ।
एकशेषे च लाभः स्याद् द्विशेषे स्वल्पलाभकः ॥१३॥
शून्यशेषे तु हानिः स्याल्लाभालाभस्य लक्षणम् ।

लाभालाभ का प्रश्न हो तो पिण्ड में ४२ जोड़कर ३ के भाग देने से १ शेष में लाभ, २ में अल्प लाभ, ० में हानि समझना ॥१३॥

जय-पराजय प्रश्नविचार

जयाऽजये क्षेपकस्तु चतुस्त्रिंशत्प्रकीर्तितः ॥१४॥

रामैर्भागं समाहृत्य एकशेषे जयं वदेत् ।
द्वाभ्यां सन्धि वदेत् प्राज्ञः शून्यशेषे पराजयः ॥१५॥

जय-पराजय का प्रश्न हो तो पिण्ड में ३४ जोड़कर ३ के भाग से १ शेष में जय, २ में सन्धि, ० में पराजय कहना चाहिये ॥

सुख-दुःख प्रश्न विचार

सुख-दुःखे क्षेपकस्तु अष्टरामाः स्मृतो बुधैः ।
अत्र भागो लोचनाभ्यामेकशेषे सुखं भवेत् ॥१६॥

सुख-दुःख का प्रश्न हो तो पिण्ड में ३८ जोड़कर २ के भाग देने से १ शेष में सुख, ० में दुःख समझना चाहिये ॥१६॥

गमन-प्रश्न —

शून्ये दुःखं विजानीयात्सुखदुःखस्य लक्षणम् ।
गमने रामरामाश्च क्षेपकः परिकीर्तितः ॥१७॥
त्रिभिर्भागं समाहृत्य एक शेषे गमः स्मृतः ।
द्वाभ्यां स्थितिर्विनिर्देश्या शून्ये मार्गान्निवर्तनम् ॥१८॥

गमन प्रश्न में पिण्ड मे ३३ जोड़कर ३ के भाग से १ शेष में गमन, २ में स्थिति (अर्थात् गमन नहीं) और शून्य शेष में यात्रा करके मार्ग से ही लौटना पड़े ॥ १७–१८ ॥

जीवन-मरण-प्रन —

जीवने मरणे क्षेपश्चचत्वारिंशत्प्रकीर्तितः ।
अत्र भागस्त्रिभिर्ग्राह्यः शेषाङ्केन फलं स्मृतम् ॥१९॥
एकेन जीवनं वाच्यं कष्टसाध्यं द्विशेषके ।
शून्ये तु मरणं प्रोक्तं ज्ञातव्यं सर्वदा बुधैः ॥२०॥

जीवन-मरण के प्रश्न में—पिण्ड में ४० क्षेपक जोड़कर ३ के भाग से १ शेष में जीवन, २ में कष्ट से जीवन और ० शेष मे मरण फल कहना चाहिये ॥१९-२०॥

तीर्थ यात्रा प्रश्न —

यात्राप्रश्ने क्षेपकस्तु नवराममितः स्मृतः ।
रामैर्भागं समाहृत्य यात्रा स्यादेकशेषके ॥२॥
द्विशेषे मध्यमा ज्ञेया न यात्रा शून्यशेषके ।

तीर्थ यात्रा सम्बन्धी प्रश्न में ३६ क्षेपक पिण्ड में जोड़कर ३ के भाग से १ शेष में उत्तम यात्रा, २ में अल्प स्थान में यात्रा और शून्य शेष मे यात्रा नहीं होती है ॥२१॥

वर्षा प्रश्न —

द्वात्रिंशद्वर्षणप्रश्ने क्षेपकः कथितो , बुधैः ॥२२॥
वह्निभिर्विभजेद्धीमानेकशेषे प्रवर्षणम् ।
द्वाभ्यां तु मध्यमा वृष्टिरनावृष्टिः खशेषके ॥२३॥

वर्षा का प्रश्न हो तो पिण्ड मे ३२ जोड़कर ३ के भाग से १ शेष में पूर्ण वर्षा, २ में मध्यम और शून्य शेष में वर्षा नहीं होती है, ऐसा समझना ॥२२–२३॥

गर्भविचार प्रश्न—

गर्भप्रश्ने क्षेपकस्तु षड्विंशत्कथितो बुधैः ।
त्रिभिर्भागं समाहृत्य गर्भो भूशेषके स्मृतः ॥२४॥
सन्देहस्तु द्विशेषे स्याच्छून्ये नास्तीति निश्चयः ।

गर्भ है या नहीं ? ऐसे प्रश्न में—पिण्ड में २६ जोड़कर ३ के भाग से १ शेष में गर्भ है, २ में सन्देह और शून्य शेष में गर्भ नहीं है, ऐसा कहना चाहिये ॥२४॥

मूक (मानसिक) प्रश्न —

पिण्डाङ्कं त्रिभिर्विभज्यैकेन जीवः ।
द्वाभ्यां धातुः । शून्येन मूलम् ॥२५॥

मानसिक प्रश्न में केवल पिण्ड में ३ के भाग से १ शेष में जीव, २ में धातु और शून्य में मूल सम्बन्धी प्रश्न समझना ।।२५।।

जीव के भेद ज्ञान—

जीवे दृष्टे जीवाश्चतुर्विधाः । पिण्डस्य चतुर्भागावशेषात् एकेन द्विपदः । द्वाभ्यां चतुष्पदः । त्रिभिर्बहुपदः । चतुर्भिरपदः । तत्र द्विपदे त्रयो भेदाः । आलिंगिते पुरुषाः, अभिधूमिते नारी । दग्धे नपुंसकः ।।२६।।

उपरोक्त विधि से जीव प्रश्न हो तो उसके द्विपद आदि ४ भेद हैं। इस लिए पिण्ड में ४ के भाग देने से १ शेष में द्विपद, २ में चतुष्पद, ३ में बहुपद और शून्य में अपद (सर्प आदि) समझना। द्विपद के पुरुष आदि ३ भेद हैं। यदि आलिंगित प्रश्न हो तो पुरुष, अभिधूमित हो तो स्त्री और दग्ध हो तो नपुंसक समझना ।।२६।।

घातु भेद —

धातवो द्विविधा । धाम्या, अधाम्याश्च ।

तत्र द्वाभ्यां भागः, एकेन धाम्याः, द्वाभ्यामधाम्याः ।।२७।।

धातु के धाम्य, अधाम्य दो भेद हैं। पिण्ड में २ के भाग से १ शेष में धाम्य (सोना, चाँदी आदि) और शून्य में अधाम्य (मोती, हीरा, पाषाण आदि) कहना ।।२७।।

धाम्य धातुओं के भेद —

धाम्या अष्टविधाः सुवर्ण-रजत-ताम्र-कांस्य-पित्तल-रंग-सीस-लोहाख्याः । तत्र अष्टभिर्भागः, एकेन सुवर्णम् । द्वाभ्यां रजतम् । त्रिभिस्ताम्रम् । चतुर्भिः कांस्यम् । पञ्चभिः पित्तलम् । षड्भिः रंगः । सप्तभिः सीसकम् । अष्टभिर्लोहम् । तत्रापि भेदद्वयम् । घटितमघटितं च । तत्र द्वाभ्यां भागः । एकेन घटितम् । द्वाभ्यामघटितम् ।।२८।।

सोना, चाँदी, ताँबा, काँसा, पीतल, राँगा, सीसा, लोहा—ये धाम्य के ८ भेद हैं। पिण्ड में ८ के भाग से १ शेष में सोना, २ में चाँदी, ३ में ताँबा ४ में काँसा, ५ में पीतल, ६ में राँगा, ७ में सीसा और शून्य शेष में लोहा कहना चाहिये। उसमें घटित [गढ़ा हुआ] और अघटित [बिना गढ़ा हुआ] दो भेद हैं। पिण्ड में २ के भाग से १ शेष में घटित और शून्य में अघटित समझना चाहिये ॥२८॥

मूलं चतुर्विधम् । वृक्ष–गुल्म–वल्ली–लताभेदात् । तत्र चतुर्भिर्विभज्यैकेन वृक्षः । द्वाभ्यां गुल्मः । त्रिभिर्वल्ली, (कूष्माण्डक-सिंहराटादयः) । चतुर्भिलता (तृण-धान्य-दूर्वा-गोधूमाः) इति । तत्रापि द्विविधाः भक्ष्यमभक्ष्यं च । तत्र पिण्डाङ्के द्वाभ्यां भक्ते एकेन भक्ष्यम् । द्वाभ्यामभक्ष्यम् । तत्रापि द्विविधं सुगन्धि-दुर्गन्धिभेदात् । प्रश्नपिण्डाङ्के द्वाभ्यां भक्ते, एकेन सुगन्धिः, द्वाभ्यां दुर्गन्धिः ॥२९॥

मूल सम्बन्धी प्रश्न हो तो उसके ४ भेद हैं। वृक्ष, गुल्म, वल्ली और लता। पिण्ड में ४ के भाग से १ शेष में वृक्ष (आम, कटहर आदि), २ में गुल्म, ३ में वल्ली (कोहड़ा आदि की लती) और शून्य शेष में लता (तृण, धान्य, गेहूँ आदि) समझना। उनके भक्ष्य-अभक्ष्य से दो भेद हैं। पिण्ड में २ के भाग से १ शेष में भक्ष्य, शून्य में अभक्ष्य। फिर भी सुगन्धि और दुर्गन्धि ये २ भेद हैं। पिण्ड में २ के भाग से १ शेष में सुगन्धि, शून्य में दुर्गन्धि समझना ॥२९॥

मूल के भेद जानने का दूसरा प्रकार —

शिरस्पर्शे वृक्षः । उदरस्पर्शे गुल्मः । पृष्ठे वल्ली । बाहुस्पर्शे लता । पादे कन्दः ॥३०॥

मस्तक स्पर्श करता हुआ पूछे तो वृक्ष, पेट स्पर्श करके पूछे तो गुल्म, पीठ के स्पर्श से वल्ली, बाँह के स्पर्श से लता और पैर के स्पर्श से कन्द समझना ॥३०॥

नष्टवस्तुज्ञान—

खे निरीक्षिते पृच्छति सति नष्टवस्तु खे कथनीयम्। अधोनिरीक्षितेऽधो वक्तव्यम्। कोणे प्रविश्य पृच्छति कोणे वक्तव्यम्। यस्मिन्दिशि प्रविश्य यत्रावलोकयेत् यदह्नि वा तदह्नि नष्टप्राप्तिर्वाच्या ॥३१॥

प्रश्नकर्ता आकाश (ऊपर) देखता हुआ पूछे तो नष्ट वस्तु पृथ्वी से ऊपर रखी हुई, नीचे देखता हुआ पूछे तो पृथ्वी में गाड़ी हुई है, ऐसा कहना। कोण में प्रवेश करके पूछे तो नष्ट वस्तु कोण में समझना। जिस दिशा से प्रवेश कर, जिस तरफ देखता हुआ पूछे उसी तरफ नष्ट वस्तु को कहना और जिस दिन पूछे उसी वार में नष्ट वस्तु की प्राप्ति कहना ॥३१॥

प्रकारान्तर —

प्रश्नध्रुवाङ्के द्वादशभिर्भक्ते शेषांका मेषादिराशयो ज्ञातव्याः, मेषे ग्रामे, वृषे क्षेत्रे, मिथुने चतुष्पथे, कर्के रसातले, सिंहेऽन्तरिक्षे, कन्यायां शून्यागारे, तुले पथि, वृश्चिके गृहे, धनुषि ग्रामे, मकरेऽन्तरिक्षे, कुम्भे तडागे, मीने नदीतीरे, गङ्गायां वा इति ॥३२॥

प्रश्न ध्रुवाङ्क (पिण्ड) में १२ का भाग देकर १ आदि शेष से मेषादि १२ राशि समझना। मेष से ग्राम में, वृष से खेत में, मिथुन से चौराहे पर, कर्क से रसातल (खात) में, सिंह से पृथ्वी से ऊपर, कन्या से शून्य घर में, तुला से मार्ग में, वृश्चिक से घर में, धनु से ग्राम में, मकर से आकाश में, कुम्भ से तालाब में और मीन से नदी (गङ्गा आदि) में नष्ट वस्तु समझना चाहिये ॥३२॥

मानसिक चिन्ता प्रश्न —

प्रश्नाक्षरध्रुवांके द्वादशभिर्भक्ते शेषांके राशयो ज्ञातव्याः। मेषे द्विपदम्, वृषे चतुष्पदम्, मिथुने युग्मम्, कर्के व्यापारः, सिंहे राजचिन्ता, कन्यायां विवाहचिन्ता, तुलायां धातुः, वृश्चिके रोगः, धनुषि लाभः, मकरे कलहः, कुम्भे गर्भः, मीने स्थान-चिन्ता, इति चिन्ताप्रश्नः ॥३३॥

पिण्ड में १२ के भाग से १ आदि शेष में मेषादि राशि समझना। मेष से द्विपद, वृष से चतुष्पद, मिथुन से युग्म (स्त्री और पुरुष), कर्म से व्यापार, सिंह से राजसम्बन्धी, कन्या से विवाह सम्बन्धी, तुला से धातु, वृश्चिक से रोग, धनु से लाभ, मकर से झगड़ा, कुम्भ से गर्भ और मीन से स्थान सम्बन्धीं चिन्ता कहना चाहिए ॥ ३३ ॥

कार्यावधि प्रश्न —

आलिङ्गिते दिनं प्रोक्त मासः स्यादभिधूमिते।
दग्धे च वत्सरं प्रोक्त मूलदेवेन भाषितम् ॥ ३४ ॥

आलिङ्गित प्रश्न हो तो दिन (याने १ महीने से अल्प कुछ दिनों में ही काम होगा), अभिधूमित हो तो कुछ मासों में यने १ वर्ष के भीतर ही) और दग्ध प्रश्न हो तों कुछ वर्षों मे कार्य-सिद्धि होगी, ऐसा कहा ॥ ४० ॥

प्रकारान्तर—

तिथिवारर्क्षयोगस्तु विघ्नः षड्भिर्युतस्तथा।
नवभिस्तु हरेद्भागं शेषांके फलमादिशेत् ॥ ३५ ॥

एकेन पक्षो द्वितयेन मासा ऋतुस्त्रिभिः स्यादयनं चतुर्भिः।
कमाद्दिनं रात्रिरथाऽपि यामघटीपलाद्यानि निवेदितानि ॥३६॥

तिथि, वार, नक्षत्र और योग संख्या जोड़ कर उसमें ६ मिला कर ९ का भाग देने से १ शेष से पक्ष, २ से मास, ३ से ऋतु, ४ से अयन, ५ से

दिन, ६ से रात्रि, ७ से पहर, ८ से घटी और शून्य से पलमात्र कार्य-सिद्धि का समय समझना ॥ २५-२६ ॥

तेजी-मन्दी प्रश्न—

प्रनपिण्डाङ्के त्रिभिर्भक्ते। एकेन समर्घम्,
द्वाभ्यां समता, शून्येन महर्घम् ॥ ३७ ॥

पिण्ड में ३ के भाग से १ शेष में सस्ता (मन्दी), २ में समान और शून्य में महँगी (तेजी) समझा ॥ ३७ ॥

जयपराजय—

आलिङ्गितेन जयः, अभिधूमितेन सन्धिः दग्धेन भङ्ग।
पिण्डाङ्के त्रिभिर्भक्ते, एकेनजयः, द्वाभ्यांसन्धिः, शून्येनभङ्ग।
दक्षिणे पृच्छति जयः, वामे पराजयः, सम्मुखे सन्धिः,
पृष्ठे मरणम्, इति भणितं मूलदेवेन ॥ ३८ ॥

जय पराजय सम्बन्धी प्रश्न में आलिङ्गित प्रश्न हो तो जय, अभिधूमित हो तो सन्धि और दग्ध प्रश्न हो तो पराजय कहना। अथवा पिण्ड में ३ के भाग से १ शेष में जय, २ में सन्धि, शून्य में पराजय। अथवा दाहिने भाग में होकर पूछे तो जय, बायें भाग से पराजय, सम्मुख होकर पूछें तो सन्धि और पीछे से पूछे तो मरण कहना चाहिये ॥ ३८ ॥

सत्यासत्य—

पिण्डाके द्वाभ्यां भक्ते एकेन सत्यं, द्वाभ्यामसत्यम् ॥३९॥

यह बात सत्य है या असत्य ? ऐसे प्रश्न में पिण्ड में २ के भाग से १ शेष में सत्य और शून्य में असत्य कहना ॥ ३९ ॥

पुरुष-स्त्री-ज्ञान-प्रश्न

प्रश्नवर्णांक-मासांक-स्तिथि-वारर्क्ष-संयुतः ।
सप्तभक्ताऽवशेषेण समे स्त्री विषमे पुमान् ॥४०॥

प्रश्न के वर्ण और स्वर के ध्रुवाङ्क में तिथि, नक्षत्र और वार की संख्या जोड़कर ७ के भाग से सम (२, ४, ६) शेष में स्त्री और विषम (१, ३, ५, ०) में पुरुष समझना ॥ ४० ॥

गर्भज्ञान प्रश्न—

वारस्त्रिगुणितः कार्यस्तिथिभिश्चैव संयुतः।
द्वाभ्यां भक्ते च यच्छेषं विषमेऽस्ति समे न हि ॥४१॥

रव्यादि वार संख्या को ३ से गुणा कर शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से तिथि संख्या मिलावे, उसमें २ के भाग से १ शेष में गर्भ है, २ में नहीं है, ऐसा कहना ॥ ४१ ॥

पुत्र कन्या ज म प्रश्न—

तिथि-वारर्क्ष-योगानां योगो नामाऽक्षरैर्युतः।
सप्तभक्ताऽवशेषेण समे कन्याऽसमे सुतः ॥४२॥

तिथि, वार, नक्षत्र और योग की संख्याओं के योग में प्रश्नकर्ता के नाम की अक्षर संख्या जोड़ कर ७ के भाग से सम (२, ४, ६) शेष में कन्या और विषम शेष में पुत्र का जन्म कहना ॥ ४२ ॥

अथवा—

प्रश्नपिण्डांके त्रिभिर्भक्ते एकेन पुत्रः, द्वाभ्यां कन्या, शून्ये नास्ति गर्भः। वा ओष्ठ-कण्ठ-ग्रीवा-ललाट-कर्ण-शीर्ष-नखान् स्पृष्ट्वा पृच्छति तदा पुत्रजन्म, नाभि-हस्त-पाद-हृदयानि स्पृष्ट्वा पृच्छति तदा कन्याजन्म इति ॥४३॥

प्रश्न पिण्ड में ३ के भाग से १ शेष में पुत्र, २ में कन्या और शून्य शेष में गर्भ का अभाव कहना। अथवा ओठ, कण्ठ, गला, ललाट, कान, मस्तक और नख का स्पर्श करके पूछे तो कन्या का जन्म कहना ॥ ४३ ॥

स्वकीय परकीय गर्भज्ञान—

योगः पञ्चगुणः कार्यो वारेण विनियोजयेत् ।
रामैर्भक्ते तु यच्छेषसेकस्तु स्वतनूद्भवः ॥४४॥
द्वाभ्यामन्याद्विजानीयात् विशेषे च स्ववीर्यजः ॥४५॥

विष्कुम्भादि योग संख्या में वार की संख्या जोड़कर ३ के भाग से १ शेष में स्वकीय और २ में परकीय और शून्य शेष में स्वकीय वीर्य से गर्भ समझना चाहिये ॥ ४४-४५ ॥

विवाह प्रश्न—

प्रश्नपिण्डाङ्के अष्टभर्भिक्ते, एकेनाऽनायासेन विवाहः, द्वाभ्यां कष्टेन विवाहः, त्रिभिर्नास्ति, चतुर्भिः कन्यामरणम्, पञ्चभिः पितृव्यादिमरणं वा देशान्तरे गमनं,षड्भिः नृपाद्भीतिः, सप्तभिर्द्वयोर्मरणं वा श्वशुरमरणम्, अष्टभिः सन्ततिमरणम्, इति विवाहचिन्ता ॥४६॥

पिण्ड में ८ से भाग देकर १ शेष में बिना यत्न से, २ में अधिक यत्न से विवाह कहना। ३ शेष में विवाह नहीं हो, ४ शेष में कन्या का मरण, ५ में चाचा का मरण, ६ में राजभय, ७ में वर-कन्या दोनों का मरण वा श्वशुर का मरण, ८ याने० शेष हो तो विवाह से सन्तान का मरण कहना ॥ ४६ ॥

जीवन मरण प्रश्न—

वर्णपिण्डं द्विगुणितं मात्रापिण्डं चतुर्गुणितं तत्र समुदाये त्रिभिर्भक्ते—एकेन जीवनं, द्वाभ्यां पीडा, शून्येन मरणम् । आलिङ्गिते दिनम्, अभिधूमिते मासः दग्धे वत्सरः ॥४७॥

प्रश्नाक्षरों से वर्णपिण्ड बनाकर उसको दूना करके उसमें चतुर्गुणित मात्रा पिण्ड जोड़ कर ३ के भाग से १ शेष में जीवन, २ में पीड़ा और

शून्य में मरण कहना चाहिये। मरण का समय—आलिङ्गित प्रश्न हो तो कुछ दिनों में, अभिधूमित हो तो कुछ मासों में और दग्ध हो तो वर्ष के बाद मरण कहना ॥ ४७ ॥

हाथी आदि सवारी प्राप्ति सम्बन्धी प्रश्न—

स्ववर्णास्त्रिगुणाः कार्या वस्तुणैंक्यरूपयुक् ।
द्विहृतं शेषतो ब्रूयाच्छून्ये लाभोऽन्यथा न हि ॥४८॥

प्रश्नकर्ता के नामाक्षरों की संख्या को ३ से गुणा कर उसमें वस्तु की नामाक्षर संख्या जोड़ कर १ और मिलावे फिर उसमें २ के भाग देने से शून्य शेष बचे तो वस्तु का लाभ होगा, १ शेष बचे तो नहीं लाभ हो, ऐसा कहना ॥ ४८ ॥

अमुक व्यक्ति से लाभ होगा या नहीं ? इस प्रकार का प्रश्न—

प्रष्टोर्नाम गुणैर्हन्यात् स्ववर्णैर्मिश्रितं हरेत् ।
रामैः प्राप्तिर्विजानीयादेकशेषे द्विके न हि ।
विशेषे चिरकालेन द्रव्यप्राप्तिर्भविष्यति ॥४९॥

जिससे द्रव्य लाभ का प्रश्न करे उसके नामाक्षरों की संख्या को ३ से गुणा कर प्रश्नकर्ता के नामक्षर मिलावे, उसमें ३ के भाग से १ शेष में शीघ लाभ, २ में नहीं और शून्य शेष में विलम्ब से लाभ समझना ॥ ४९ ॥

द्रव्य लाभ प्रमाण प्रश्न—

तन्नामवर्णसंख्याया हता नन्दैर्युताः शरैः ।
सप्तभिस्तु हरेद्भागं शेषाङ्के दशकाः स्मृताः ॥५०॥
जानीयात् तावतीं प्राप्तिं कुलमानानुसारतः ॥५१॥

प्रश्नकर्ता के नामाक्षरों की संख्या को ९ से गुणा कर ५ जोड़े, उसमें ७ के भाग से शेष तुल्य दशक समझना। अर्थात् १ शेष में १०, २ में २० इत्यादि। उतनी प्राप्ति की संख्या कुल और व्यवसाय के अनुसार सैकड़ा, हजार, लाख आदि समझना चाहिये ॥ ५०-५१ ॥

किसी पुस्तक में "लब्धं पञ्चगुणं" इत्यादि असङ्गत पाठ प्रक्षिप्त है।

दूताऽऽगमन प्रश्न—

तिथिस्त्रिगुणिता कार्या पञ्चयुक्तारमिश्रिता ॥५२॥
सप्तभिर्गुणिता द्वाभ्यां भक्तशेषे फल वदेत् ।
एकेन चलितो दूतः शून्यशेषे तु निश्चलः ॥५३॥

त्रिगुणित तिथि संख्या में ५ जोड़ कर वार की संख्या मिलावे। उसे ७ से गुणा कर २ के भाग से १ शेष में दूत आ रहा है, और शून्य में नहीं, ऐसा कहना ॥ ५२-५३ ॥

परदेशी के आगमन सम्बन्धी प्रश्न—

तिथि-घस्रौ तथा लग्नं नामाक्षरसमन्वितम् ।
नक्षत्रकरणं चैव सप्तभिर्भागमाहरेत् ॥५४॥
एकेन तत्र वासश्च द्वाभ्यां च गमनं भवेत् ।
तृतीये चाऽर्द्धमार्गे तु चतुर्थे ग्रामसन्निधौ ॥५५॥
पञ्चमे पुनरावृत्तिः षष्ठे व्याधिसमाकुलः ।
सप्तमे शून्यकार्यः स्यात् प्रश्नश्च कथितो बुधैः ॥५६॥

तिथि, वार, नक्षत्र, करण और लग्न संख्या में परदेशी के नामाक्षर संख्या मिलावे, उसमें ७ के भाग से १ शेष में परदेशी जहाँ रहता है उसी स्थान में है, २ में चला, ३ में आधे मार्ग में, ४ में ग्राम के समीप में, ५ में चल कर फिर लौट गया, ६ में रोगयुक्त और शून्य शेष में कार्य नहीं हुआ है, ऐसा कहना ॥ ५४-५६ ॥

किसी से भेट का प्रश्न—

घटिकास्त्रिगुणाः सैकाः सप्तभिः संयुताः पुनः ।
वेदैश्च भाजितास्तत्र शेषांके फलमादिशेत् ॥५७॥
एकशेषे च मिलनं द्वाभ्यां च गमनान्तरे ।

त्रिशेषे दर्शनाभावः समुद्रैः क्लेशकृद्भवेत् ॥५८॥

इष्ट घड़ी में १ जोड़कर ३ से गुणा करे फिर उसमें ७ जोड़कर ४ के भाग देने से १ शेष में भेंट होगी, २ मे वहाँ जाने पर भेंट होगी, ३ मे भेंट नहीं होगी और ४ में बहुत यत्न से भेंट होगी, ऐसा कहना ॥ ५७-५८ ॥

अमुक व्यक्ति क्या कर रहा है? ऐसा प्रश्न—

तिथिवारर्क्षयोगानां योगो द्विघ्नस्त्रिभियुतः ।
ततो द्वादशभिर्भाज्यः शेषे च फलमादिशेत् ॥५९॥

तिथि, वार; नक्षत्र और योग की संख्याओं के योग को २ से गुणाकर ३ मिलावे, उसमे १२ के भाग से १ आदि शेष से निम्नलिखित फल कहे ॥५९॥

हास्ययुक्तः स्थितो भूम्यां स्वस्थासनयुतो जनैः ।
ताम्बूलाद्युपचारैश्च ह्येक शेषे फलं वदेत् ॥६०॥

१ शेष बचे तो अपने साथियों के साथ बैठकर हास्य युक्त ताम्बूल (पान) आदि का सेवन कर रहा, ऐसा कहना ॥ ६० ॥

व्यायामेन युतश्चापि स्वल्पमानवमिश्रितः ।
उद्वेगवार्ताश्रवणं द्विशेषे दर्शन फलम् ॥६१॥

२ शेष में थोड़े आदमियों के साथ व्यायाम कर रहा है, परन्तु कुछ उद्वेगकारक वार्ता भी सुन रहा हैं ॥ ६१ ॥

कुपितः स्वासनेस्थोऽपे चिन्तयन् मनसाऽस्ति सः ।
पश्चात् कार्यप्रसङ्गेन गमनं च त्रिशेषके ॥६२॥

३ शेष बचे तो अपने स्थान पर बैठा कुछ सोच रहा है, फिर कार्यवश कहीं चलने वाला है ॥ ६२ ॥

वेदशेषे तु सुप्तः स्याज्जलेन मुखशुद्धिकृत् ।
पञ्चशेषे तु सुप्तः सन्नुत्थितो भोजनं भवेत् ॥६३॥

४ शेष में जल से मुँह धो रहा है। ५ शेष में, सोकर उठा है, कुछ खा रहा है, ऐसा कहना ॥ ६३ ॥

रसशेषे मार्गमध्ये दर्शनं निश्चितं भवेत् ।
स्त्रीभोगव्यवहारं च सप्तशेषे विनिर्दिशेत् ।६४।

६ शेष बचे तो मार्ग में है, इस समय मुलाकात हो सकती है और ७ शेष बचे तो स्त्री के साथ क्रीड़ादि कर रहा है, ऐसा कहना ॥ ६४ ॥

अष्टशेषे यदा तस्य चित्तोद्वेगस्तदा भवेत् ।
नन्दशेषे यदा दृष्टे धर्मकार्येषु तत्परः ।६५।

८ शेष बचे तो मन में उद्वेग हो रहा है, ९ शेष में कार्य में तत्पर है, ऐसा कहना ॥६५॥

दशमे राजसम्मानं रुद्रे भोजनमेव च ।
द्वादशे दुःखितः किन्तु स्त्रीभोगं कर्तुमिच्छति ।६६।

१० शेष से राजदरबार में सम्मान पा रहा है, ११ शेष से भोजन कर रहा है, और शून्य शेष से दुखी है, परन्तु स्त्री से मिलना चाहता है, ऐसा कहना ॥६६॥

नष्ट जातक विधान—

वर्णध्रुवा द्विगुणिता मात्राणां ध्रुवसंयुताः ।
एवं कालविचारोऽयं मूलदेवेन भाषितम् ॥६७॥

तत्र ध्रुवाङ्कसमुदाये १०८ भक्ते शेषे वर्षः । तत्रैवाक्षरपिण्डे द्वाभ्यां भक्ते एकेन शुक्लपक्षः, द्विशेषे कृष्णपक्षः ॥ तत्रैवाक्षर-पिण्डे सप्तविंशतिभक्ते एव शेषेऽश्विनी, द्विशेषे भरणीत्येवं नक्षत्राणि ज्ञातव्यानि ॥

अज्ञात जन्म समय वाला नष्ट जन्म पत्र बनाने का प्रश्न करे तो पूर्ववत् वर्ण ध्रुवांक को २ से गुणा कर उसमें मात्रा ध्रुवांकों को जोड़ कर पिण्ड

बनावे। उसमें १०८ के भाग देकर शेष गत वर्ष समझे। उसी पिण्ड में २ के भाग से १ शेष में शुक्ल, २ में कृष्ण पक्ष समझे। उसी पिण्डाङ्क में २७ के भाग से १ आदि शेष से अश्विनी आदि जन्म के नक्षत्र समझे ॥६७॥

तत्रैव पिण्डे त्रिंशद्भक्ते शेषमंशाः ॥ तत्रैव पिण्डे द्वादश-भक्ते शेषेण एकेन फाल्गुनः, द्वाभ्यां चैत्रः, त्रिभिर्वैशाखः, चतुर्भिर्ज्येष्ठः, पञ्चभिराषाढः, एवं श्रावणादयो बोध्याः ॥ एवं तत्रैव पिण्डे द्वादशभक्ते एकेन मेषः, द्वाभ्यां वृषः, त्रिभि-र्मिथुनमित्यादिक्रमेण लग्नानि ज्ञातव्यानि ॥६८॥

उसी पिण्ड में ३० के भाग देकर १ आदि शेष से अंश समझे। उसी पिण्ड में १२ के भाग देकर १ आदि शेष में क्रम से फाल्गुन, चैत्र आदि मास समझना। फिर उसी पिण्ड में १२ के भाग से १ आदि शेष से मेष आदि लग्न जन्म समय का समझकर नष्ट जन्म-पत्र बनाना चाहिये ॥६८॥

इति केरलप्रश्नसंग्रहे पूर्वभागः।

अथोत्तरार्धम्

ध्वजादि आय द्वारा शुभाशुभ फल—

भूतादिविविधान् प्रश्नान् कथयिष्यामि संग्रहे।
आयप्रश्नाख्यमध्यायं चमत्कृतिकरं परम् ॥१॥

अब भूत, भविष्य और वर्तमान फल समझने में चमत्कारयुक्त ध्वजादि आयवश फलाध्याय को कहता हूँ ॥ १ ॥

उच्चारितफलनाम्नो वर्णक्रमतो ध्वजादयोऽष्टाऽऽयाः।
प्रश्नाक्षरतोऽप्यथवा विकल्पनीया बुधैर्नित्यम् ॥२॥

प्रश्नकर्ता के मुख से कथित फलादि नाम के आदि अक्षर से अवर्गादि क्रम से ध्वज आदि ८ आय समझना ॥ २ ॥

आयों के नाम—

ध्वजो धूम्रश्च सिंहश्च श्वानो वृष-खरौ गजः ।
ध्वांक्षश्चाऽऽयाष्टकं ज्ञेयं शुभाऽशुभफलं क्रमात् ॥३॥

ध्वज, धूम्र, सिंह, श्वान, वृष, खर, गज, और ध्वांक्ष ये क्रम से ८ आयों के नाम हैं ॥ ३ ॥

इन (ध्वजादि आयों) के स्वामि—

ध्वजे सूर्यश्च विज्ञेयः धूम्रे भौमस्तथैव च ।
सिंहे शुक्रश्च विज्ञेयः श्वाने सौम्यस्तथैव च ॥४॥
वृषे गुरुश्च विज्ञेयः खरे सूर्यसुतस्तथा ।
गजे ध्वांक्षे चन्द्र-राहू एते च पतयः स्मृताः ॥५॥

ध्वज के सूर्य, धूम्र के मङ्गल, सिंह के शुक्र, श्वान के बुध, वृष के गुरु, खर के शनि, गज के चन्द्रमा और ध्वांक्ष के राहु स्वामी हैं ॥ ४-५ ॥

स्पष्टार्थ चक्र—

ध्वज	धूम्र	सिंह	स्वान	वृष	खर	गज	ध्वांक्ष	आय नाम
२	२	३	४	५	६	७	८	
अ	क	च	ट	त	प	य	श	अकारादिवर्ण
इ	ख	छ	ठ	थ	फ	र	ष	
उ	ग	ज	ड	द	ब	ल	स	
ए	घ	झ	ढ	ध	भ	व	ह	
ओ	ङ	ञ	ण	न	म	०	०	
सूर्य	मंगल	शुक्र	बुध	वृह.	शनि	चन्द्र	राहु	स्वामी

इस प्रकार प्रश्नाक्षर से आय समझ कर शुभाशुभ फल—

ध्वज-कुञ्जर-सिंहेषु वृषे सिद्धिर्भवेद्ध्रुवम् ।
ध्वांक्षे श्वाने खरे धूम्रे कार्यसिद्धिर्भवेन्नहि ॥६॥

प्रश्न के आदि अक्षर से ध्वज, गज, सिंह, वृष हो तो कार्य की सिद्धी और ध्वांक्ष, श्वान, खर, धूम्र से असिद्धि समझना ॥ ६ ॥

कोई चीज है या नहीं ? इस प्रकार के प्रश्न में—

ध्वज-कुञ्जर-सिंहेषु वृषे चाऽस्ति विनिश्चितम् ।
ध्वांक्षे श्वाने खरे धूम्रे नाऽस्तीति समुदाहृतम् ॥७॥

ध्वज, गज, सिंह वृष आय होते हैं । ध्वांक्ष, श्वान, धूम्र, खर आय हो तो नहीं हैं, ऐसा कहना चाहिए ॥ ७ ॥

लाभालाभ प्रश्न—

ध्वजे गजे वृषे सिंहे शीघ्रलाभो भवेद्ध्रुवम् ।
ध्वांक्षे श्वाने खरे धूम्रे नाशश्च कलहप्रदः ॥८॥

ध्वज, गज, वृष, सिंह हो तो लाभ, यदि ध्वांक्ष, श्वान, खर, धूम्र हो तो हानि और कलह कहना चाहिए ॥ ८ ॥

ध्वजे गजे वृषे सिंहे नष्टलाभो भवेद्ध्रुवम् ।
ध्वांक्षे धूम्रे खरे श्वाने हानिर्भवति निश्चितम् ॥९॥

ध्वज, गज, वृष, सिंह हो तो नष्ट वस्तु का लाभ, ध्वांक्ष, धूम्र, खर, श्वान हो तो लाभ नहीं हो, ऐसा कहना ॥ ९ ॥

चौर जाति ज्ञान—

ध्वजे च ब्राह्मणश्चौरो धूम्रे क्षत्रिय एव च ।
सिंहे वैश्यश्च विज्ञेयः खरे च सेवकस्तथा ॥१०॥
गजे दासी च विज्ञेयाध्वांक्षे च नायकस्तथा ।
वृषे श्वाने तथा ज्ञेयश्चौरश्चाऽन्त्यजसम्भवः ॥११॥

ध्वज आय से ब्राह्मण, धूम्र से क्षत्रिय, सिंह से वैश्य, खर से शूद्र (सेवक) गज से दासी, ध्वांक्ष से मालिक ही को चोर समझना और वृष, श्वान आय हो तो नीच जाति को चोर समझना ॥ १०-११ ॥

नष्ट वस्तु का दिक्ज्ञान—

ध्वजे पूर्वगतं चैव धूम्रे आऽग्नेयदिग्गतम् ।
सिंहे च दक्षिणे वस्तु श्वाने नैर्ऋत एव च ॥१२॥
पश्चिमे वृषभे ज्ञेयं वायव्यां च खरे तथा ।
उत्तरे कुञ्जरे द्रव्यमीशान्यां ध्वांचके तथा ॥१३॥

ध्वज आय में पूर्व, धूम्र में अग्निकोण, सिंह में दक्षिण, श्वान में नैर्ऋत्य कोण, वृष में पश्चिम, खर में वायव्य कोण, गज में उत्तर और ध्वांक्ष में ईशान कोण में चोरी की चीज की गई है, ऐसा कहना ॥ १२-१३ ॥

नष्ट वस्तु का स्थान ज्ञान—

ऊषरे च ध्वजे नष्टं धूम्रे चाऽग्निगृहे तथा ।
गतं सिंहे तथाऽरण्ये श्वाने स्वान्यतरे गृहे ॥१४॥

ध्वज आय हो तो ऊसर में, धूम्र हो तो अग्निगृह में, सिंह हो तो वन में और श्वान तथा अन्य आय हो तो घर में नष्ट वस्तु है, ऐसा कहना ॥ १४ ॥

प्रवासी कुशल प्रश्न—

ध्वजे सिंहे वृषे चैव कुञ्जरे कुशलं भवेत् ।
ध्वांक्षे श्वाने खरे धूम्रे नास्तीति कुशलं वदेत् ॥१५॥

ध्वज, सिंह, वृष, गज आय से प्रवासी कुशल है, ध्वांक्ष, श्वान, खर, धूम्र से कुशल नहीं है, ऐसा समझना ॥ १५ ॥

प्रवासी चर स्थिर प्रश्न —

ध्वजे गजे स्थिरश्चैव श्वाने सिंहे च चञ्चलः ।
वृषे धूम्रे प्रयाणस्थः खरे ध्वांक्षे च कष्टकम् ॥१६॥

ध्वज, गज आय हो तो परदेशी स्थिर है, श्वान, सिंह हो तो कहीं अन्यत्र चला गया है, वृष धूम्र हो तो चलने की तैयारी कर रहा है, खर, ध्वांक्ष हो तो परदेशी कष्ट में है, ऐसा कहना ॥ १६ ॥

पथिक या शत्रु की सेना कितने दूर पर है? इस प्रकार के प्रश्न—

ध्वजे धूम्रे समीपस्थो दूरस्थो गज-सिंहयोः ।
वृषे खरेऽर्धमार्गस्थो ध्वांक्षे श्वाने पुनर्गतः ॥१७॥

ध्वज, धूम्र आय हो तो नजदीक में गज, सिंह तो अभी दूर में है, वृष, खर हो तो आधा मार्ग में है, ध्वांक्ष, श्वान हो तो मार्ग से लौट गया, ऐसा समझना ॥ १७ ॥

कार्यावधि प्रश्न—

ध्वजे पक्षमिति प्रोक्तं धूम्रे सप्तदिनं तथा ।
एकविंशश्च सिंहे च श्वाने मासं तथैव च ॥१८॥
वृषे तु सार्द्धमासं च खरे मासद्वय तथा ।
गजे मासत्रयं प्रोक्यं ध्वांक्षे ह्ययनसम्मितम् ॥१९॥

ध्वज में १ पक्ष, धूम्र में ७ दिन, सिंह में २१ दिन, श्वान में १ मास, वृष में १॥ मास, खर में २ मास, गज में ३ मास और ध्वांक्ष में ६ मास समय कहना ॥ १८-१९ ॥

धातु-जीव-मूल चिन्ता प्रश्न—

ध्वजे धूम्रे धातु-चिन्ता गजे सिंहे च मूलकम् च ।
श्वाने खरे वृषे ध्वांक्षे जीवचिन्ता वदेत् बुधः ॥२०॥

ध्वज, धूम्र, हो तो धातु, गज, सिंह हो तो मूल, श्वान, खर, वृष और ध्वांक्ष आय हो तो जीव सम्बन्धी चिन्ता समझना ॥ २० ॥

धातु के भेद—

ध्वजे सुवर्णकं ज्ञेयं धूम्रे रौप्यं तथैव च ।
सिंहे ताम्रं च विज्ञेयं श्वाने लोहं तथैव च ॥२१॥

वृषे कांस्यं खरे नागं कथितं सीसकं गजे ।
ध्वांक्षे पित्तलकं ज्ञेयं कथितं गणकोत्तमैः ॥२२॥

ध्वज में सुवर्ण, धूम्र में चाँदी, सिंह में ताम्र, श्वान में लोह, वृष में काँसा खर में राँगा, गज में सीसा, ध्वांक्ष में पीतल समझना ॥२१-२२॥

भूषणों के भेद —

ध्वजे आभूषणं मूर्ध्नि धूमे तु मुखभूषणम् ।
कण्ठस्याऽऽभूषणं सिंहे श्वान च कर्णयोरिदम् ॥२३॥
वृषे हस्तभवं ज्ञेयं अंगुलीभूषणं खरे ।
गजे तु कटिसूत्रं स्यात् ध्वांक्षे पादादिकं तथा ॥२४॥

ध्वज में मस्तक के भूषण, धूम्र में मुख के, सिंह में कण्ठ के, श्वान में कान के, वृष में हाथ के, खर में अँगुली के, गज में कमर के और ध्वांक्ष में पैर के भूषण कहना चाहिये ॥२३-२४॥

मुष्टिगत प्रश्न में वस्तु के वर्णज्ञान —

कुसुम्भश्च ध्वजे ज्ञेयं धूम्रे श्वेतं तथैव च ।
लोहिताङ्ग भवेत् सिंहे श्वाने पाण्डुरनीलकम् ॥२५॥
पीतवर्णो वृषे ज्ञेयः खरे च मिश्रवर्णकः ।
गजे च श्यामवर्णश्च ध्वांक्षे च मिश्रवर्णकम् ॥२६॥

ध्वज में कसूमी सदृश, धूम्र मे श्वेत, सिंह में रक्त, श्वान में पाण्डु और कृष्ण वर्ण, वृष में पीत वर्ण, खर में मिश्र वर्ण, गज में श्याम वर्ण तथा ध्वांक्ष में भी मिश्र वर्ण समझना ॥२५-२६॥

वस्तु का ज्ञान —

ध्वजे पत्रं च विज्ञेयं धूम्रे पुष्पं प्रकीर्तितम् ।
सिंहे फलं च विज्ञेयं श्वाने काष्ठादिकं तथा ॥२७॥
वृषे धान्यं तथा प्रोक्तं खरे तृणं निगद्यते ।

गजे बीजं च विज्ञेयं तुषं ध्वांक्षे तथा स्मृतम् ॥२८॥

ध्वज में पत्र धूम्र में पुष्प, सिंह में फल, श्वान में लकड़ी, वृष में अन्न, खर में तृण, गज में बीज, ध्वांक्ष में भूसा समझना ॥ २७-२८ ॥

कन्या पुत्र जन्मप्रश्न–

ध्वजे वृषे गजे सिंहे गुर्विण्याः पुत्रमादिशेत् ।
धूम्रे श्वानेखरे ध्वांक्षे कन्याजन्म विनिर्दिशेत् ॥२९॥

ध्वज, वृष, गज और सिंह आय हो तो पुत्र, तथा धूम्र, स्वान, खर और ध्वांक्ष में कन्या का जन्म कहना ॥ २९ ॥

आयुर्दाय वर्षप्रमाण प्रश्न–

ध्वजे सिंहे शतं प्रोक्तं गजे व्योमगजस्तथा ।
वृषे च षष्टिवर्षाणि खरे व्योमाऽब्धिसंज्ञकम् ॥३०॥
श्वाने च विंशतिः प्रोक्ता ध्वांक्षेचषोडशस्तथा ।
धूम्रे वर्षमिति ज्ञेयमित्थायुश्च विचिन्तयेत् ॥३१॥

ध्वज, सिंहआयमें १००वर्ष, गज में ८० वर्ष, वृष मे ६० वर्ष खर में ४०, श्वान में २०, ध्वांक्षमें १६ और धूम्रमें १ वर्ष आयु कहना चहिए ॥३०-३०॥

जयपराजय प्रश्न–

ध्वजे गजे वृषे सिंहे स्थायिनो जयमाप्नुयात् ।
धूम्रे श्वाने खरे ध्वांक्षे यायिनो जयमादिशेत् ॥३२॥

ध्वज, गज, वृष सिंह आय हो तो स्थायी (मुद्दालह) की जय और धूम्र, श्वान, खर, ध्वांक्ष हो तो यायी (मुद्दई =पहिले चढ़ाई मुकदमा आदि करने वाला) की जय होगी, ऐसा कहना ॥ ३१ ॥

जनश्रुति सत्य है, य; मिथ्या ? इस प्रश्न में –

उपश्रुतिः स्याद्भवतीति सत्या ध्वजे गजे सिंहे-वृषे तु प्रश्ने

श्वाने खरे ध्वांक्षकधूमएवमुपश्रुतिः स्याद्भवतीति मिथ्या ॥३३॥

प्रश्न के आदि अक्षर से ध्वज गज, सिंह या वृष आय हो तो खबर सत्य है, स्वान, ध्वांक्ष, धूम्र, हो तो मिथ्या समझना ॥ ३३ ॥

वर्षा प्रश्न-

धूम्रे गजे वृषे श्वाने वृष्टिर्भवति चोत्तमा ।
ध्वजे सिंहे विलम्बश्च खरे ध्वांक्षे न वर्षणम् ॥३४॥

धूम्र, गज, वृष, श्वान आय हो तो उत्तम वृष्टि, ध्वज, सिंह में विलम्ब से वृष्टि, खर, ध्वांक्ष में वर्षा नहीं होगी, ऐसा कहना ॥ ३४ ॥

कितने दिन में वर्षा होगी ? इस प्रश्न में—

धूम्रे सप्त-दिनं प्रोक्तं वृषे दिग्भिस्तथैव च ।
श्वाने च विंशतिर्ज्ञेया गजे च सप्तविंशति ॥३५॥
सिंहेध्वजेचव्योमाऽब्धिःखरेध्वांक्षेऋतुस्तथा ।
वर्षाकाले क्रमो ह्येष कथितो गणकोत्तमैः ॥३६॥

धूम्र में सात दिन, वृष में १० दिन, श्वान में २० दिन, गज में २७ दिन सिंह और ध्वज में ४० दिन, खर और ध्वांक्ष में ६० दिन में वर्षा होगी. इस प्रकार वर्षा समय (आषाढ़ से अश्विन तक) के प्रश्न में कहना चाहिए ॥ ३५- ६ ॥

स्त्रीलाभ प्रश्न—

ध्वजे च सिंहे च वृषे च लाभः स्त्रियं सुरूपां लभते सुशीलाम् ।
श्वाने गजे ध्वांक्ष-खरे च धूम्रे कार्यस्य हानिः कलहस्तथैव ॥३७॥

ध्वज, सिंह, वृष आय हो तो सुशीला और सुन्दरी स्त्री का लाभ तथा श्वान, गज, ध्वांक्ष, खर आय हो तो हानि और कलह हो ॥ ३७ ॥

व्यवहार प्रश्न—

ध्वजे गजे वृषे सिंहे व्यवहारः शुभावहः ।
ध्वांक्षे श्वाने खरे धूम्रे कलहाऽऽद्यशुभप्रदः ॥३८॥

ध्वज, गज, वृष, सिंह आय में उत्तम और ध्वांक्ष, श्वान, खर, धूम्र आय में कलह-प्रद व्यवहार कहना चाहिए ॥ ३८ ॥

राज्यप्राप्ति प्रश्न—

गजे ध्वजे चिरात् प्राप्तिर्वृषे सिंहे च शीघ्रता ।
श्वाने खरे न च प्राप्तिः शत्रुर्गृह्णाति शेषयोः ॥३९॥

ध्वज, गज आय हो तो विलम्ब से, वृष, सिंह हो तो शीघ्र राज्य प्राप्ति तथा श्वान, खर आय हो तो राज्यप्रप्ति नहीं होगी। और शेष (धूम्र, ध्वांक्ष) आय हो तो राज्यप्राप्ति होगी, परञ्च फिर भी शत्रु छीन लेगा, ऐसा कहना ॥ ३९ ॥

नौका (जहाज) का कुशल प्रश्न—

ध्वज-कुञ्जर-सिंहेषु वृषे च कुशलान्विता ।
ध्वांक्षे धूम्रे खरे श्वाने ध्रुवं नौका निमज्जति ॥४०॥

ध्वज, गज, सिंह, वृष, आय हो तो नौका कुशल सहित आती है, यदि ध्वांक्ष, धूम्र, श्वान खर आय हो तो नौका डूब गई या डूब जायेगी ॥ ४० ॥

किसी अधिकार की प्राप्ति के प्रश्न—

ध्वजे गजे चिरात् प्राप्तिर्वृषे सिंहे च सत्वरम् ।
कलहश्च खरे श्वाने नास्ति च ध्वांक्ष-धूम्रयोः ॥४१॥

ध्वज, गज, आय हो तो बिलम्ब से वृष, सिंह हो तो शीघ्र प्राप्ति होगी, तथा खर, श्वान में कलह से प्राप्ति और ध्वांक्ष, धूम्र मे प्राप्ति नहीं होगी, ऐसा कहना ॥ ४१ ॥

कार्य की सिद्धि-असिद्धि प्रश्न में—

ध्वजे गजे चिरात् कार्यं त्वरितं वृष-सिंहयोः ।
दीर्घकाले खरे श्वाने ध्वांक्षे धूम्रे न सिद्ध्यति ॥४२॥

ध्वज, गज, आय में विलम्बन से, वृष, सिंह में शीघ्र, खर, श्वान में अत्यन्त विलम्ब से कार्य सिद्धि तथा ध्वांक्ष, धूम्र में कार्य की सिद्धि नहीं कहना ॥४२॥

जेल से छूटने के प्रश्न में—

धूम्रे श्वाने खरे ध्वांक्षे बन्दी शीघ्रं समुच्यते ।
ध्वांक्षे गजे वृषे सिंहे बन्दिकष्टं समादिशेत् ॥४३॥

धूम्र, श्वान, खर, ध्वांक्ष आय हो तो शीघ्र छूटेगा, ध्वज, गज, वृष, सिंह आय हो तो वन्दी को अभी कष्ट है, नहीं छूटेगा ॥ ४३ ॥

कार्य सिद्धि के लिये अनुष्ठान—

ध्वजे भैरवपूजा स्याद् धूम्रे च जगदम्बिकाम् ।
सिंहे च पूजयेत् सूर्यं श्वाने वायुसुतं तथा ॥४४॥
वृषे शिवार्चनं चैव खरे वागीश्वरीं तथा ।
गणेशं गजराजाख्ये ध्वांक्षे च पितृपूजनम् ॥४५॥

कौन सा अनुष्ठान करने से कार्य सिद्धि होगी ? इस प्रकार के प्रश्न में यदि ध्वज आय हो तो भैरव जी की, धूम्र हो तो दुर्गा की, सिंह हो तो सूर्य की, श्वान हो तो हनुमान् की, वृष हो तो शंकर की, खर हो तो सरस्वती की, गज हो तो गणेशजी की और ध्वांक्ष हो तो पितरों की पूजा करने से कार्य सिद्धि होती है ॥ ४४-४५ ॥

कार्य-सिद्धि के लिए क्या दान करना चाहिये ? ऐसे प्रश्न में—

गोधूमान्नं ध्वजे दद्याद् धूम्रे चैव तिलांस्तथा ।
पीतवस्त्रं च सिंहे वै श्वाने च बलिविस्तरम् ॥४६॥

वृषे च तन्दुलाः प्रोक्ताः खरे चणकधान्यकम् ।
गजे गुडं तथा दद्याद् ध्वांक्षे च यवधान्यकम् ॥४७॥

ध्वज आय हो तो गेहूँ, धूम हो तो तिल, सिंह हो तो पीत वस्त्र श्वान, हो तो भात आदि की बलि, वृष हो तो चावल, खर हो तो चना, गज हो तो गुड़ और ध्वांक्ष हो तो जौ, धान-दान करने से कार्य सिद्धि होती है ॥४६-४७॥

कितने समय में कार्य होगा ? इस प्रकार के प्रश्न में—

ध्वजे सप्त-दिनं प्रोक्तं सिंहे पक्षं तथैव च ।
वृषे मासश्च विज्ञेयो गजे मासत्रयं तथा ॥४८॥
श्वाने खरे च षण्मासं धूम्रे ध्वांक्षे च वर्षकम् ।
इति कालं वदेत् प्रश्ने सर्वकार्येषु चिन्तयेत् ॥४९॥

ध्वज हो तो ७ दिन, सिंह में १५ दिन, वृष हो तो १ मास, गज हो तो ३ मास, श्वान और खर हो तो ६ मास, धूम्र, ध्वांक्ष हो तो १ वर्ष में कार्य सिद्धि होगी । सब प्रश्नों में इससे काल का निर्णय समझना चाहिए ॥४८–४९॥

इति केरलप्रश्नसंग्रहे आयफलाध्यायः ।

—●—

अथाऽङ्गविद्या

अङ्गविद्यां प्रवक्ष्यामि नारदेन स्वयंकृताम् ।
यथाऽङ्गस्पर्शमात्रेण बुधैर्ज्ञेयं शुभाऽशुभम् ॥५०॥

अब नारदोक्त अङ्गविद्या को कहता हूँ, जिसके द्वारा प्रश्नकर्त्ता के अङ्गादि स्पर्श करने पर ही उसके शुभ अशुभ फल पण्डित समझ कर कह सकते हैं ॥५०॥

स्पृश्यमानः शिरः पृच्छेन्महालाभो भविष्यति ।
हिरण्यधनधान्यस्य वाञ्छितस्याऽस्य निश्चितम् ॥५१॥

यदि मस्तक स्पर्श करके पूछे तो सुवर्ण, धन, धान्य आदि वाञ्छित पदार्थों का अधिक लाभ होगा, ऐसा कहना ॥५१॥

मुखं च नासिकां चैव चक्षुः श्रवणमेव च ।
स्पृश्यमानो यदा पृच्छेत्तदा लाभं विनिर्दिशेत् ॥५२॥

मुख, नाक, आँख और कान का स्पर्श करता हुआ पूछे तो भी अभीष्ट वस्तुओं का लाभ कहना ॥५२॥

ग्रीवां स्कन्धं तथा कण्ठं बाहुं चैव तथा स्पृशेत् ।
पृच्छति पृच्छको यस्य तस्य लाभोऽल्प एव च ॥५३॥

गला, कन्धा, कण्ठ, बाहु का स्पर्श करके पूछे तो इच्छा से कुछ कम लाभ होगा, ऐसा कहना ॥ ५३ ॥

उदरं नाभिमूलं वा स्पृष्ट्वा यः पृच्छति स्वयम् ।
अन्नपानं भवेत्तस्य कृषिकर्मेति सिद्ध्यति ॥५४॥

पेट अथवा नाभि का स्पर्श कर पूछे तो उसको उत्तम भोजन मिलेगा और खेती का कार्य सिद्ध होगा, ऐसा कहना ॥ ५४ ॥

कटिं शिश्नं तथोरूं च पृच्छको यदि संस्पृशेत् ।
कन्यालाभो भवेत्तस्य पुत्रसम्पत्तिरेव च ॥५५॥

कमर, लिङ्ग, जाँघ का स्पर्श करके पूछे तो कन्या और पुत्र को सुख मिलेगा, ऐसा कहना ॥ ५५ ॥

जानुजङ्घे तथा गुल्फौ पादौ च संस्पृशेत् ।
पृच्छकस्य भवेन्मृत्युः क्लेशो वाऽपि न संशयः ॥५६॥

यदि ठेहुन से नीचे पैर का स्पर्श करके पूछे तो प्रश्नकर्ता का मरण अथवा क्लेश कहना ॥ ५६ ॥

फलं पुष्पं नवं वस्त्रं गृहीत्वा यदि पृच्छति।
सर्वं च पृच्छतस्तस्य जायते सफलोदयम् ॥५७॥

फल, फूल वा नवीन वस्त्र ग्रहण करके पूछे तो मनोरथ सफल होगा, ऐसा कहना ॥ ५७ ॥

अङ्गारकास्तृणादींश्च गृहीत्वा यदि पृच्छति।
न तस्य जायते सिद्धिः कार्यस्य प्रयतोऽपि हि ॥५८॥

यदि कोयला, तृण आदि ग्रहण करके पूछे तो यत्न से भी कार्य सिद्धि नहीं होगी, ऐसा कहना ॥५८॥

शस्त्रं काष्ठं तथा गन्धं गृहीत्वा यदि पृच्छति।
क्षोभस्तस्य भवेन्नित्यं ग्रहदोषश्च जायते ॥५९॥

यदि शस्त्र, काठ वा गन्ध युक्त वस्तु (चन्दनादि) ग्रहण करके पूछे तो क्षोभ और ग्रहदोष से कष्ट कहना ॥५९

हिरण्यं रत्नभाण्डं च गृहीत्वा चाऽन्नपानकम्।
पृच्छक सिद्धिमाप्नोतिः सद्य एव न संशयः ॥६०॥

सुवर्ण, रत्न अन्न, जल लेकर पूछे तो निश्चय उसका मनोरथ सिद्ध होता है ॥६०॥

आरामस्य स्पृशन्भूमिं यदा पृच्छति पृच्छकः।
सर्वसिद्धिर्भवेत्तस्य नाऽत्र कार्या विचारणा ॥६१॥

यदि बगीचे की भूमि का स्पर्श करके पूछे तो उसे सब कार्यों की सिद्धि होती है ॥६१॥

देवगेहे नदीतीरे स्थाने चैव मनोरमे ।
उपविश्यं यदा पृच्छेत्तदा सिद्धिमवाप्नुयात् ॥६२॥

देव मन्दिर, नदी तीर या सुन्दर स्थान में बैठकर पूछे तो भी कार्यों की सिद्धि होती है ॥६२॥

शुष्ककाष्ठे क्षते दुष्टे गुल्मे भग्ने तथैव च ।
स्थानेष्वेतेषु यः पृच्छेत्तस्य क्लेशं समादिशेत् ॥६३॥

सूखे काठ पर बैठ कर अथवा खडहर आदि खराब स्थान मे बैठ कर पूछे तो प्रश्नकर्ता को क्लेश कहना ॥६३॥

सुखोपविष्टे दिक्स्थे च पृच्छके सिद्धिरद्भुता ।
विदिक्स्थिते दुरासीने कार्यसिद्धिर्न जायते ॥६४॥

सुखपूर्वक, पूर्व, दक्षिण, पश्चिम या उत्तर दिशा में बैठ कर पूछे तो कार्य की सिद्धि, यदि दुष्ट आसन पर बैठ कर या विदिक् (कोण की दिशा) में मुख कर पूछे तो कार्य सिद्धि नहीं होती है ॥६४॥

पुनः संक्षेप में अङ्ग स्पर्श से फल

अङ्गुष्ठ-कर्ण-वदन-स्तन-केश-
कक्ष्यंस-पादतल-गुह्य-शिरांसि गण्डम् ।
ओष्ठं च संस्पृशति वाक्त शुभानि यद्वा
प्रष्टा तदा कलयति ध्रुवमिष्टसिद्धिम् ॥६५॥

अँगूटा, कान, मुख, हृदय, हाथ, केश, कमर, कंधा, पदतल, गुदा, मस्तक, गाल या ओठ का स्पर्श करके पूछे तो शुभफल और इष्टसिद्धि होती है ॥६५॥

मतान्तर से—

स्पृशेच्छिरो वक्त्र-विलोचन-श्रुतिं
प्राप्नोति धान्याऽम्बर-हेमपूर्वकम् ।

ग्रीवा-हनु-स्कन्धयुगं यदा नरो

दुःखात्तदा तस्य विलम्बमादिशेत् ॥६६॥

मस्तक, मुख, नेत्र, कान का स्पर्श करके पूछे तो अन्न, वस्त्र, सोना की प्राप्ति हो। यदि गला, दाढ़ी, कन्धा स्पर्श करके पूछे तो यत्न से लाभ कहना ॥६६॥

नाभिं सकुक्षिं स्पृशतोऽर्थसिद्धिं

गुल्फाङ्घ्रिजानुस्पृशतोऽतिदुःखम् ।

जङ्घां कटिं लिङ्गमिह स्पृशेद्यो

कन्यां लभेत सुलभां सुयोगात् ॥६७॥

पेट, नाभि के स्पर्श से कार्य सिद्ध, गुल्फ, पैर, ठेहुन का स्पर्श करे तो कष्ट, जाँघ, कमर, लिङ्ग के स्पर्श करके पूछे तो कन्या की प्राप्ति कहना ॥६७॥

कचस्पृगेति प्रभुतां फलादि

स्पृष्टं शुभं वै तृण-वह्निशेषम् ।

न सिद्धिवान् कर्दम-काष्ठ-वस्त्र—

स्पृक् खेटपीडां लभते तथाऽऽधिम् ॥६८॥

केश स्पर्श करके पूछे तो प्रभुत्व की प्राप्ति, फल, फूल आदि का स्पर्श करके पूछे तो शुभ, तृण, कोयला के स्पर्श से कार्य-सिद्ध नहीं, और कीचड़, काठ, वस्त्र स्पर्श करके पूछे तो ग्रह पीड़ा और चिन्ता होती है ॥६८॥

प्रश्न के प्रथम अक्षर से लग्न जानकर शुभाशुभ फल—

रविः कुजो भृगुर्ज्ञोज्याः शनीन्दू वर्गपाः क्रमात् ।

लग्नं तत्र कुजादीनामोजे चौजं समे समम् ॥६९॥

तल्लग्नाद् गृहयोगैश्च वक्ष्यमाणैः फलं दिशेत् ।

प्रश्नोच्चारितवर्णेभ्यां लग्नांशांस्त कल्पयेत् ॥७०॥

रवि,मङ्गल, शुक्र, बुध, गुरु, शनि और चन्द्र ये क्रम से अवर्ग, कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, पवर्ग और यवर्ग के स्वामी हैं। प्रश्न के प्रथम अक्षर यदि मङ्गलादि ग्रह के वर्ग में हों तो विषम अक्षर से विषम राशि, और सम अक्षर से सम राशि लग्न समझना। उस लग्न के योग से आगे कहे फल को कहना चाहिये। प्रश्नकर्ता के मुख से जो प्रथम अक्षर, निकले उसी से लग्न समझना ॥ ६९—७० ॥

उदाहरण—प्रश्नकर्ता के मुख से प्रथम अक्षर 'ग' निकला तो गवर्ग होने के कारण मङ्गल वर्गेश हुआ, इसलिये लग्नेश मङ्गल हुआ। मङ्गल की २ राशि (मेष और वृश्चिक) है, उसमें प्रश्नाक्षर विषम (तीसरा) है इस लिये विषम राशि 'मेष' लग्न हुआ।

स्पष्टार्थ चक्र—

ग्रह	रवि	मङ्गल	शुक्र	बुध	गुरु	शनि	चन्द्र
वर्ग	अ ऋ आ ॠ इ ऌ ई ॡ उ ए ऊ ऐ ओ औ	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य ष र स ल ह व श
राशि	सिंह	१ मेष ८ वृश्चि	२ वृष ७ तुला	३ मिथु ६ कन्या	९ धनु १२ मीं.	१० म. ११ कुं.	४ कर्क

स्पष्टार्थ श्लोक —

अवर्गे सिंहलग्नं च कवर्गे मेष-वृश्चिकौ ।
चवर्गे यूक-वृषभौ टवर्गे युग्म-कन्यके ॥७१॥

तवर्गे चाप-मीनौ च पवर्गे कुम्भ-नक्रकौ ।
यशवर्गे कर्कटश्चैव लग्नं शब्दाक्षरैर्वदेत् ॥७२॥

अर्थ स्पष्ट है ऊपर चक्र देखो ॥ ७१--७२ ॥

इस प्रकार लग्न ज्ञान करके उससे फल—

लग्ने चरे न हृतलाभऋणः पदार्थ-
नाशो गदक्षयगमाऽऽगमबन्धमोक्षाः ।
प्रष्टुर्भवन्ति परचक्रमुपैति शीघ्रं ।
कल्याण-वृद्धि-कलहोपशमा भवन्ति ॥७३॥

यदि जर लग्न हो तो नष्ट वस्तु का लाभ नहीं हो, ऋण के प्रश्न में ऋण नहीं मिले, स्थान प्राप्ति नही हो, धन लाभ नहीं हो, रोग के प्रश्न में रोग का नाश हो, गमन वा आगमन हो, बन्दी मोक्ष प्रश्न में बन्दी छूटे, वत्रु की सेना आवे, कुशल प्रश्न में कुशल हो, कलह प्रश्न मेंक लह शान्त हो, ऐसा कहना ॥७३॥

लग्ने स्थिरे न मृतनष्टमयौ पदार्थ-
लाभो गमाऽऽगमगक्षयबन्धमोक्षाः ।
न स्युस्तथैव परचक्रमथोऽर्थनाशः
कल्याण-वृद्धि-कलहोपशमा भवन्ति ॥७४॥

स्थिर लग्न में मृत प्रश्न हो तो मरण नहीं हो, एवं नष्ट लाभ नहीं, स्थान और धन की प्राप्ति नहीं, जाना-आना नही, रोग नाश नहीं, बन्धन से मुक्ति नही, होगी ऐसा कहना । तथा शत्रु की सेना आवेगी या नहीं इस प्रश्न में— शत्रु की सेना नहीं आवेगी, अर्थ की हानि, नहीं होगी, कल्याण को वृद्धि नहीं होगी, कलह प्रश्न हो तो कलह शान्ति नहीं होगी, ऐसा कहना ॥७४॥

द्व्यङ्गोदये हृतजनाप्तिरभीष्टवस्तु-
प्राप्तिश्चिरेण गमना-ऽऽगम-बन्ध-मोक्षाः ।
श्त्रुर्भवन्ति परचक्रमुपैत्त शीघ्रं
रोगी च जीवति कलिः शमते तु भूयः ॥७५॥

द्विस्वभाव लग्न में नष्ट वस्तु तथा अभीष्ट वस्तु की प्राप्ति विलम्ब से हो, गमन-आगमन, बन्धन से छूटना भी विलम्ब से कहना चाहिये । परश्च शत्रु सेना आगकन प्रश्न हो तो शीघ्र आवेगी, रोगी का रोग शीघ्र छुटेग कलह शीघ्र शान्त होगा, ऐसा कहना ॥७५॥

इति केरल-प्रश्नसंग्रहे उत्तरार्धम् ॥ शुभम् ॥
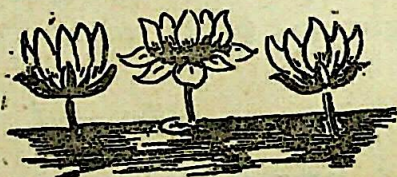
पुस्तक-प्राप्ति-स्थानम्
मास्टर खेलाड़ीलाल संकटाप्रसाद
संस्कृत पुस्तकालय,
कचौड़ीगली, वाराणसी-१
[फोन : ६३०१५]

३०

पुस्तक प्राप्ति स्थान :-

मास्टर खेलाड़ीलाल संकटाप्रसाद

कचौड़ीगली :: वाराणसी-१